इस्लाम के पैग़म्बर

मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

प्रोफेसर के. एस. रामाकृष्णाराव

अध्यक्ष, दर्शन–शास्त्र विभाग, राजकीय

कन्या विद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)

www.islamhouse.com

1428-2007

यह ई-पुस्तक **मधुर संदेश संगम** नई दिल्ली-२ द्वारा प्रकाशित १९९० ई० के एडीशन पर आधारित है।

इसे पुनः टाइप और शोधकर ई-पुस्तक के स्वरूप में इस्लामहाउस डाटकाम - www.Islamhouse.com - पर प्रकाशित किया जा रहा है। इसे पुस्तक रूप में प्रिंट करने की सहूलत भी उप्लब्ध है। **अताउर्रहमान**

इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद

मुहम्मद (ﷺ—सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का जन्म अरब के रेगिस्तान में मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार 20 अप्रैल सन 571 ई० में हुआ। 'मुहम्मद' का अर्थ होता है 'जिस की अत्यन्त प्रशंसा की गई हो'। मेरी नज़र में आप अरब के तमाम सपूतों में महाप्रज्ञ और सब से उच्च बुद्धि के व्यक्ति हैं। क्या आप से पहले और क्या आप के बाद, इस लाल रेतीले अगम रेगिस्तान में जन्मे सभी कवियों और शासकों की अपेक्षा आप का प्रभाव कहीं ज़्यादा व्यापक है।

जब आप प्रकट हुए अरब उपमहाद्वीप केवल एक सूना रेगिस्तान था। मुहम्मद (ﷺ) की सशक्त आत्मा ने इस सूने रेगिस्तान से एक नये संसार का निर्माण किया। एक नये जीवन का, एक नयी संस्कृति और नयी सभ्यता का। आप के द्वारा एक ऐसे नये राज्य की स्थापना हुई, जो मराकश से लेकर इंडीज़ तक फैला। और जिसने तीन महाद्वीपों —एशिया, अफ्रीक़ा और यूरोप के विचार और जीवन पर अपना असर डाला।

मैंने जब पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के बारे में लिखने का इरादा किया, तो पहले तो मुझे संकोच हुआ, क्योंकि यह एक ऐसे धर्म के बारे में लिखने का मामला था जिसका मैं अनुयायी नहीं हूँ। और यह एक नाज़ुक मामला भी है, क्योंकि दुनिया में विभिन्न धर्मों के मानने वाले लोग पाये जाते हैं और एक धर्म के अनुयायी भी परस्पर विरोधी मतों (Schools of Thoughts) और फिरक़ो में बंटे रहते हैं।

हालांकि कभी–कभी यह दावा किया जाता है कि धर्म पूर्णतः एक व्यक्तिगत मामला है, लेकिन इस से इन्कार नहीं किया जासकता कि धर्म में पूरे जगत को अपने घेरे में लेने की प्रवृत्ति पायी जाती है, चाहे उसका संबंध प्रत्यक्ष से हो या अप्रत्यक्ष चीज़ों से। वह किसी न किसी और कभी न कभी हमारे हृदय, हमारी आत्माओं और हमारे मन और मस्तिष्क में अपनी राह बना लेता है। चाहे उसका तअल्लुक़ उसके चेतन से हो, अवचेतन या अचेतन से हो या किसी ऐसे हिस्से से हो जिस की हम कल्पना कर सकते हों। यह समस्या उस समय और ज़्यादा गंभीर और अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाती है जब कि इस बात का गहरा यक़ीन भी हो कि हमारा भूत, वर्तमान और भविष्य सब के सब एक अत्यन्त कोमल, नाज़ुक, संवेदनशील रेशमी सूत्र से बंधे हुए हैं। यदि हम कुछ ज़्यादा ही संवेदनशील हुए तो फिर हमारे सन्तुलन केन्द्र

के अत्यन्त तनाव की स्थिति में रहने की संभावना बनी रहती है। इस दृष्टि से देखा जाये, तो दूसरों के धर्म के बारे में जितना कम कुछ कहा जाये उतना ही अच्छा है। हमारे धर्मों को तो बहुत ही छिपा रहना चाहिए। उनका स्थान तो हमारे हृदय के अन्दर होना चाहिए और इस सिलसिले में हमारी जुबान बिल्कुल नहीं खुलनी चाहिए।

लेकिन समस्या का एक दूसरा पहलू भी है। मनुष्य समाज में रहता है और हमारा जीवन चाहे–अनचाहे, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दूसरे लोगों के जीवन से जुड़ा होता है। हम एक ही धरती का अनाज खाते हैं, एक ही जल स्रोत का पानी पीते हैं और एक ही वायुमंडल की हवा में सांस लेते हैं। ऐसी दशा में भी, जबकि हम अपने निजी विचारों व धार्मिक धारणाओं पर क़ाईम हों, अगर हम थोड़ा बहुत या भी जान लें कि हमारा पड़ोसी किस तरह सोचता है, उसके कर्मों के मुख्य प्रेरक स्रोत क्या हैं? तो यह जानकारी कम से कम अपने माहौल के साथ तालमेल पैदा करने में सहायक बनेगी। यह बहुत ही पसन्दीदा बात है कि आदमी को संसार के तमाम धर्मों के बारे में उचित भावना के साथ जानने की कोशिश करनी चाहिए ताकि आपसी जानकारी और मेल–मिलाप को बढ़ावा मिले और हम बेहतर तरीक़े से अपने क़रीब या दूर के पास–पड़ोसी की क़द्र कर सकें।

फिर हमारे विचार वास्तव में उतने बिखरे नहीं हैं जैसा कि वे ऊपर से दिखाई देते हैं। वास्तव में वे कुछ केन्द्रों के गिर्द जमा होकर स्टाफिक जैसा रूप धारण कर लेते हैं, जिन्हें दुनिया के महान धर्मों और जीवन्त आस्थाओं की सूरत में देखते हैं। जो धरती में लाखों ज़िन्दगियों का मार्ग–दर्शन करते और उन्हें प्रेरित करते हैं। अतः अगर हम इस संसार के आदर्श नागरिक बनना चाहते हैं तो यह हमारी ज़िम्मेदारी भी है कि हम उन महान धर्मों और दार्शनिक सिद्धान्तों को जानने की अपने बस भर कोशिश करें, जिन का मानव पर शासन रहा है।

इन आरम्भिक टिप्पणियों के बावजूद धर्म का क्षेत्र ऐसा है, जहां प्रायः बुद्धि और संवेदन के बीच संघर्ष पाया जाता है। यहां फिसलने की इतनी सम्भावना रहती है कि आदमी को उन कम समझ लोगों का बराबर ध्यान रखना पड़ता है, जो वहां भी घुसने से नहीं चूकते, जहां प्रवेश करते हुए फरिश्ते भी डरते हैं। इस पहलु से भी यह अत्यन्त जटिल समस्या है। मेरे लेख का विषय एक विशेष धर्म के सिद्धान्तों से है। वह धर्म ऐतिहासिक है और उसके पैग़म्बर का व्यक्तित्व भी ऐतिहासिक है। यहां तक कि सर विलियम म्यूर जैसा इस्लाम विरोधी आलोचक भी कुरआन के बारे में कहता है, ''शायद संसार में (कुरआन के अतिरिक्त) कोई अन्य पुस्तक ऐसी नहीं है, जो बारह शताब्दियों तक अपने विशुद्ध मूल के

साथ इस प्रकार सुरक्षित हो।'' मैं इस में इतना और बढ़ा सकता हूँ कि पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) भी एक ऐसे अकेले ऐतिहासिक व्यक्ति हैं, जिन के जीवन की एक–एक घटना को बड़ी सावधानी के साथ आने वाली नस्लों के लिए सुरक्षित कर लिया गया है। उन का जीवन और उन के कारनामे रहस्य के परदों में छुपे हुए नहीं हैं। उनके बारे में सही–सही जानकारी प्राप्त करने के लिए किसी को सर खपाने और भटकने की ज़रूरत नहीं। सत्य रूपी मोती प्राप्त करने के लिए ढेर सारी रास से भूसा उड़ा कर चन्द दाने प्राप्त करने जैसे कठिन परिश्रम की ज़रूरत नहीं है।

मेरा काम इसलिए और आसान हो गया है कि अब वह समय तेज़ी से गुज़र रहा है, जब कुछ आलोचक इस्लाम का ग़लत और बहुत ही भ्रामक चित्रण किया करते थे। प्रोफेसर बीवान 'केम्बरिज मेडिवल हिस्ट्री' (Cambridge Medieval History) में लिखता है, ''इस्लाम और मुहम्मद के संबंध में 19 वीं सदी के आरम्भ से पूर्व यूरोप में जो पुस्तकें प्रकाशित हुईं उन की हैसियत केवल साहित्यिक कुतूहलों की रह गयी है।''

मेरे लिए पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) के जीवन चरित्र के लिखने की समस्या बहुत ही आसान हो गयी है, क्योंकि अब हम इस प्रकार के भ्राकम ऐतिहासिक तथ्यों का

सहारा लेने के लिए मजबूर नहीं हैं और इस्लाम के संबंध में भ्रामक निरूपणों के स्पष्ट करने में हमारा समय बर्बाद नहीं होता।

मिसाल के तौर पर इस्लामी सिद्धान्त और तलवार की बात किसी उल्लेखनीय क्षेत्र में ज़ोरदार अन्दाज़ में सुनने को नहीं मिलती। इस्लाम का यह सिद्धान्त कि **'धर्म के मामले में कोई ज़ोर–ज़बरदस्ती नहीं'**, आज सब पर भली–भांति विदित है। विश्व विख्यात इतिहासकार गिबन ने कहा है, ''मुसलमानों के साथ यह ग़लत और घातक धारणा जोड़ दी गई है कि उन का यह कर्तव्य है कि 'वे हर धर्म का तलवार के ज़ोर से उन्मूलन कर दें।' इस इतिहासकार ने कहा है कि 'यह जाहिलाना इल्ज़ाम कुरआन से भी पूरे तौर पर खन्डित हो जाता है और मुस्लिम विजेताओं के इतिहास तथा ईसाइयों की पूजा–पाठ के प्रति उन की ओर से क़ानूनी और सार्वजनिक उदारता का जो प्रदर्शन हुआ है उस से भी यह इल्ज़ाम तथ्यहीन सिद्ध होता है।'

एक क़बीले के मेहमान का ऊंट दूसरे क़बीले की चरागाह में ग़लती से चले जाने की छोटी सी घटना से उत्तेजित होकर जो अरब चालीस वर्ष तक ऐसे भयानक रूप से लड़ते रहे थे कि दोनों पक्षों के कोई सत्तर हज़ार आदमी मारे गये, और दोनों क़बीलों के पूर्ण विनाश का भय पैदा हो गया था, उस उग्र क्रोधातुर और लड़ाकू क़ौम को इस्लाम के पैग़म्बर ने आत्म सयंम एवं अनुशासन की ऐसी शिक्षा दी, ऐसा प्रशिक्षण दिया कि वे युद्ध के मैदान में भी नमाज़ अदा करते थे।

विरोधियों से समझौते और मेल–मिलाप के लिए आप ने बार–बार प्रयास किये, लेकिन जब सभी प्रयास बिल्कुल विफल हो गये और हालात ऐसे पैदा होगए कि आप को केवल अपने बचाव के लिए लड़ाई के मैदान में आना पड़ा तो आप ने रण नीति को बिल्कुल ही एक नया रूप दिया। आप के जीवन–काल में जितनी भी लड़ाईयां हुईं –यहां तक कि पूरा अरब आप के अधिकार क्षेत्र मे आ गया– उन लड़ाइयों में काम आने वाली इन्सानी जानों की संख्या चन्द सौ से अधिक नहीं है।

आप ने बर्बर अरबों को सर्वशक्तिमान अल्लाह की उपासना यानी नमाज़ की शिक्षा दी, अकेले–अकेले अदा

करने की नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से अदा करने की, यहां तक कि युद्ध विभीषिका के दौरान भी। नमाज़ का निश्चित समय आने पर और यह दिन में पांच बार आता है –सामूहिक नमाज़ (नमाज़ जमाअत के साथ) का परित्याग करना तो दूर उसे स्थगित भी नहीं किया जा सकता। एक गरोह अपने खुदा के आगे सिर झुकाने में, जबकि दूसरा शत्रु से जूझने मे व्यस्त रहता। जब पहला गरोह नमाज़ अदा कर चुकता तो वह दूसरे का स्थान ले लेता और दूसरा खुदा के सामने झुक जाता।

बर्बरता के युग में मानवता का विस्तार रण भूमि तक किया गया। कड़े आदेश दिये गये कि न तो लाशों के अंग भंग किये जायें और न किसी को धोखा दिया जाये और न विश्वासघात किया जाये और न ग़बन किया जाये और न बच्चों, औरतों या बूढ़ों को क़त्ल किया जाये, और न खजूरों और दूसरे फलदार पेड़ों को काटा या जलाया जाये। और न संसार–त्यागी सन्तों और उन लोगों को छेड़ा जाये जो इबादत में लगे हों। अपने कट्टर से कट्टर दुश्मनों के साथ खुद पैग़म्बर साहब का व्यवहार आप के अनुयायियों के लिए एक उत्तम आदर्श था। मक्का पर अपनी विजय के समय आप अपनी अधिकार शक्ति की पराकाष्ठा पर आसीन थे। वह नगर जिसने आप को और आप के साथियों को सताया और तकलीफें दीं, जिसने आप को और आप के साथियों को देश

निकाला दिया और जिस ने आप को बुरी तरह सताया और बायकाट किया, हालांकि आप दो सौ मील से अधिक दूरी पर पनाह लिये हुए थे। वह नगर आज आप के क़दमों में पड़ा था। युद्ध के नियमों के अनुसार आप और आप के साथियों के साथ क्रूरता का जो व्यवहार किया गया, उस का बदला लेने का आप को पूरा हक़ हासिल था। लेकिन आप ने इस नगर वालों के साथ कैसा व्यवहार किया? हज़रत मुहम्मद का हृदय प्रेम और करूणा से छलक पड़ा। आप ने ऐलान किया, **"आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं और तुम सब आज़ाद हो।"**

आत्म रक्षा में युद्ध की अनुमति देने के मुख्य लक्ष्यों में से एक यह भी था कि मानव को एकता के सूत्र में पिरोया जाए। अतः जब यह लक्ष्य पूरा होगया तो बदतरीन दुश्मनों को भी माफ़ कर दिया गया। यहां तक कि उन लोगों को भी माफ़ कर दिया गया, जिन्होंने आप के चहीते चचा 'हमज़ा' को क़त्ल करके उनके शव को विकृत किया और पेट चीर कर कलेजा निकाल कर चबाया।

सार्वभौमिक भाई–चारे का नियम और मानव समानता का सिद्धान्त, जिस का ऐलान आप ने किया, वह उस महान योगदान का परिचायक है जो हज़रत मुहम्मद (ﷺ) ने मानवता के सामाजिक उत्थान के लिए दिया। यों तो सभी बड़े धर्मों ने एक ही सिद्धान्त का

प्रचार किया है, लेकिन इस्लाम के पैग़म्बर ने इन को व्यवहारिक रूप देकर पेश किया। इस योगदान का मूल्य शायद उस समय पूरी तरह स्वीकार किया जा सकेगा, जब अन्तर्राष्ट्रीय चेतना जाग जाएगी, जातिगत पक्षपात और पूर्वाग्रह पूरी तरह मिट जायेंगे और मानव भाई–चारे की एक मज़बूत धारणा वास्तविकता बन कर सामने आयेगी।

इस्लाम के इस पहलू पर विचार व्यक्त करते हूए सरोजनी नायडू कहती हैं:

''यह पहला धर्म था जिसने जम्हूरियत (लोकतंत्र) की शिक्षा दी और उसे एक व्यवहारिक रूप दिया। मिसाल के तौर पर जब मीनारों से अज़ान दी जाती है और इबादत करने वाले मस्जिदों में जमा होते हैं तो इस्लाम की जम्हूरियत (जनतंत्र) एक दिन में पांच बार साकार होती है, जब रंक और राजा एक दूसरे से कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते हैं और पुकारते हैं 'अल्लाहु अक्बर' यानी अल्लाह ही बड़ा है।''

भारत की महान कवयित्री अपनी बात जारी रखते हूए कहती है:

''मैं इस्लाम की इस अविभाज्य एकता को देख कर बहुत प्रभावित हुई हूँ, जो लोगों को सहज रूप में एक दूसरे का भाई बना देती है। जब आप एक मिस्री, एक

अलजीरियाई, एक हिन्दुस्तानी और एक तुर्क से लन्दन में मिलते हैं तो आप महसूस करेंगे कि उनकी निगाह में इस चीज़ का कोई महत्व नहीं है कि एक का संबंध मिस्र से है और एक का वतन हिन्दुस्तान आदि है।''

महात्मा गाँधी अपनी अद्‌भुत शैली में कहते हैं :

''कहा जाता हैं कि योरोप वाले दक्षिणी अफ्रीक़ा में इस्लाम के प्रसार से भयभीत हैं, उस इस्लाम से! जिसने स्पेन को सभ्य बनाया, उस इस्लाम से जिसने मराकश तक रोशनी पहुंचाई और संसार को भाई–चारे की इन्जील पढ़ाई। दक्षिणी अफ्रीक़ा के योरोपियन इस्लाम के फैलाव से बस इस लिए भयभीत हैं कि उसके अनुयायी गोरों के साथ कहीं समानता की मांग न कर बैठें। अगर ऐसा है तो उनका डरना ठीक ही है। यदि भाई–चारा एक पाप है, यदि काली नस्लों की गोरों से बराबरी ही वह चीज़ है, जिससे वह डर रहें हैं, तो फिर (इस्लाम के प्रसार से) उनके डरने का कारण भी समझ में आ जाता है।''

दुनिया हर साल हज्ज के मौक़े पर रंग, नस्ल और जाति आदि के भेदभाव से मुक्त इस्लाम के चमत्कारपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय भव्य प्रदर्शन को देखती है। यूरोपवासी ही नहीं, बल्कि अफ्रीक़ी, फारसी, भारतीय, चीनी आदि सभी मक्का में एक ही दिव्य परिवार के सदस्यों के रूप में

एकत्र होते हैं, सभी का लिबास एक जैसा होता है। हर आदमी बग़ैर सिली दो सफेद चादरों में होता है, एक कमर पर बंधी होती है तथा दूसरी कंधों पर पड़ी हुई। सब के सिर खुले हुए होते हैं, 'मैं हाज़िर हूं, ऐ खुदा, मैं तेरी आज्ञा के पालन के लिए हाज़िर हूं, तू एक है और तेरा कोई शरीक नहीं।' इस प्रकार कोई ऐसी चीज़ बाक़ी नहीं रहती, जिसके कारण किसी को बड़ा कहा जाये, किसी को छोटा। और हर हाजी इस्लाम के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का प्रभाव लिए घर वापस लैटता है।

प्रोफेसर हर्गरोन्ज (भ्नतहतवदरम) के शब्दों में :

''पैग़म्बरे इस्लाम द्वारा स्थापित राष्ट्र संघ ने अन्तर्राष्ट्रीय एकता और मानव भ्रातृत्व के नियमों को ऐसे सार्वभौमिक आधारों पर स्थापित किया है जो अन्य राष्ट्रों को मार्ग दिखाते रहेंगे।''

वह आगे लिखता है:

''वास्तविकता यह है कि राष्ट्र–संघ की धारणा को वास्तविक रूप देने के लिए इस्लाम का जो कारनामा है, कोई भी अन्य राष्ट्र उसकी मिसाल पेश नहीं कर सकता।''

पैग़म्बरे इसलाम ने लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली को उसके उत्कृष्टतम रूप में स्थापित किया। खलीफा उमर और खलीफा अली (पैग़म्बरे इस्लाम के दामाद), खलीफा

मन्सूर, अब्बास (खलीफा मामून के बेटे) और कई दूसरे खलीफा और मुस्लिम सुल्तानों को एक साधारण व्यक्ति की तरह इस्लामी अदालतों में जज के सामने पेश होना पड़ा। हम सब जानते हैं कि काले नीग्रो लोगों के साथ आज भी 'सभ्य' सफेद रंग वाले कैसा व्यवहार करते हैं? फिर आप आज से चौदह शताब्दी पूर्व इस्लाम के पैग़म्बर के समय के काले नीग्रो बिलाल के बारे में अन्दाज़ा कीजिए। इस्लाम के आरम्भिक काल में नमाज़ के लिए अज़ान देने की सेवा को अत्यन्त आदरणीय व सम्मान जनक पद समझा जाता था और यह आदर इस गुलाम नीग्रो को प्रदान किया गया था। मक्का पर विजय के बाद उन को हुक्म दिया गया कि नमाज़ के लिए अज़ान दें और यह काले रंग और मोटे होंठों वाला नीग्रो गुलाम इस्लामी जगत के सबसे पवित्र और ऐतिहासिक भवन, पाक काबा, की छत पर अज़ान देने के लिए चढ़ गया। उस समय कुछ अभिमानी अरब चिल्ला उठे 'आह बुरा हो उसका, वह काला हब्शी गुलाम अज़ान के लिए पवित्र काबा की छत पर चढ़ गया है।'

शायद यही नस्ली गर्व और पूर्वाग्रह था जिस के जवाब में आप (ﷺ) ने एक खुत्बा दिया। वास्तव में इन दोनों चीज़ों को जड़ बुनियाद से खत्म करना आप के लक्ष्य में से था। अपने खुत्बे में आप ने फरमायाः

''सारी प्रशंसा और शुक्र अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अज्ञान काल के अभिमान और अन्य बुराइयों से छुटकारा दिया। ऐ लोगो, याद रखो कि सारी मानव–जाति केवल दो श्रेणियों में बटी हैः धर्म–निष्ठ और अल्लाह से डरने वाले लोग जो कि अल्लाह की दृष्टि में सम्मानित हैं। दूसरे उल्लंघनकारी, अत्याचारी, अपराधी और कठोर हृदय लोग हैं जो खुदा की निगाह में गिरे हुए और तिरस्कृत हैं। अन्यथा सभी लोग एक आदम की औलाद है और अल्लाह ने आदम को मिट्टी से पैदा किया था।''

इसी की पुष्टि कुरआन में इन शब्दों में की गई हैः

''ऐ लोगो! ळमने तुम को एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और तुम्हारी विभिन्न जातियां और वंश बनाये ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, निःसन्देह अल्लाह की दृष्टि में तुम मे सब से अधिक सम्मानित वह है जो (अल्लाह से) सब से ज़्यादा डरने वाला है। निःसन्देह अल्लाह खूब जानने वाला और पूरी तरह खबर रखने वाला है।'' (सूरः हुजरात–13)

इस प्रकार पैग़म्बरे इस्लाम हृदयों में ऐसा ज़बरदस्त परिवर्तन करने में सफल हो गये कि सबसे पवित्र और सम्मानित समझे जाने वाले खानदानों के अरबों ने भी इन नीग्रो गुलाम का जीवन साथी बनाने के लिए अपनी

बेटियों से विवाह करने का प्रस्ताव किया। इस्लाम के दूसरे खलीफ़ा और मुसलमानों के अमीर (अध्यक्ष) जो इतिहास में उमर महान (फारूक़े आज़म) के नाम से प्रसिद्ध हैं, इस नीग्रो को देखते ही तुरन्त खड़े हो जाते और इन शब्दों में उनका स्वागत करते, 'हमारे बड़े, हमारे सरदार आते हैं।'

धरती पर उस समय की सबसे अधिक स्वाभिमानी क़ौम, अरबों में कुरआन और पैग़म्बर मुहम्मद ने कितना महान परिवर्तन कर दिया था। यही कारण है कि जर्मनी के एक बहुत बड़े शायर गोयटे ने पवित्र कुरआन के बारे में अपने उदगार प्रकट करते हुए ऐलान किया है कि:

''यह पुस्तक हर युग में लोगों पर अपना अत्याधिक प्रभाव डालती रहेगी।''

इसी कारण जार्ज बर्नाड शा का भी कहना है:

''अगर अगले सौ सालों में इंग्लैंड ही नहीं, बल्कि पूरे यूरोप पर किसी धर्म के शासन करने की संभावना है तो वह इस्लाम है।''

इस्लाम की यह लोकतांत्रिक प्रवृत्ति है जिसने स्त्री को पुरूष की दासता से आज़ादी दिलाई। सर चार्ल्स ई० ए० हेमिल्टन ने कहा है:

''इस्लाम की शिक्षा यह है कि मानव अपने स्वभाव की दृष्टि से बेगुनाह है। वह सिखाता है कि स्त्री और पुरूष दोनों एक ही जौहर (तत्व) से पैदा हुए, दोनों में एक ही आत्मा है और दोनों में इसकी समान रूप से क्षमता पाई जाती है कि वे मांसिक, आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि से उन्नति कर सकें।''

अरबों में यह परम्परा सुदृढ़ रूप से पाई जाती थी कि विरासत का अधिकारी तन्हा वही हो सकता है जो बरछा और तलवार चलाने में सिद्धस्त हो, लेकिन इस्लाम अबला का रक्षक बन कर आया और उसने औरत को पैतृक विरासत में हिस्सेदार बनाया। उसने औरतों को आज से सदियों पहले सम्पत्ति में मिल्कियत का अधिकार दिया। उसके कहीं बारह सदियों बाद 1881 ई० में उस इंग्लैंड ने, जो लोकतंत्र का गहवारा समझा जाता है, इस्लाम के इस सिद्धान्त को अपनाया और उसके लिए 'दि मैरीड वीमन्स एक्ट' (विवाहित स्त्रियों का अधिनियम) नामक क़ानून पास हुआ। लेकिन इस घटना से बारह सदी पहले पैग़म्बरे इस्लाम यह घोषणा कर चुके थेः

''औरत–मर्द युग्म में औरतें मर्दों का दूसरा हिस्सा हैं। औरतो के अधिकार का आदर होना चाहिए।''–''इसका ध्यान रहे कि औरतें अपने निश्चित अधिकार प्राप्त कर पारही हैं (या नहीं?)।''

इस्लाम का राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था से सीधा सम्बंध नहीं है, बल्कि यह संबंध अप्रत्यक्ष रूप में है और जहां तक राजनैतिक और आर्थिक मामले इन्सान के आचार व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उस सीमा में दोनों क्षेत्रों में निःसन्देह उसने कई अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं। प्रोफेसर मेसिंगनन के अनुसार :

''इस्लाम दो प्रतिकूल अतिशयों के बीच सन्तुलन स्थापित करता है और चरित्र निर्माण का, जो कि सभ्यता की बुनियाद है, सदैव ध्यान रखता है।''

इस उद्देश्य को प्राप्त करने और समाज विरोधी तत्वों पर क़ाबू पाने के लिए इस्लाम अपने विरासत के क़ानून और संगठित एवं अनिवार्य ज़कात की व्यवस्था से काम लेता है। और एकाधिकार (इजारादारी), सूद ख़ोरी, अप्राप्त आमदनियों व लाभों को पहले ही निश्चित कर लेने, मंडियों पर क़ब्ज़ा कर लेने, ज़ख़ीरा अन्दोज़ी (Hoarding) बाज़ार का सारा सामान ख़रीद कर क़ीमतें बढ़ाने के लिए कृत्रिम अभाव पैदा करना, इन सब कामों को इस्लाम ने अवैध घोषित किया है। इस्लाम में जुवा भी अवैध है। जबकि शिक्षा–संस्थाओं, इबादतगाहों तथा चिकित्सालयों की सहायता करने, कुएं खोदने यतीमख़ाने स्थापित करने को पुण्यतय काम घोषित किया। कहा जाता है कि यतीमख़ानों की स्थापना का आरम्भ पैग़म्बरे इस्लाम की शिक्षा से ही हुआ। आज का संसार अपने

यतीमख़ानों की स्थापना के लिए उसी पैग़म्बर का आभारी है, जो कि खुद यतीम था। कारलायल पैग़म्बर मुहम्मद के बारे में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहता है :

''यह सब भलाइयां बताती हैं कि प्रकृति की गोद मे पले बढ़े इस मरूस्थलीय पुत्र के हृदय में, मानवता, दया, और समता के भाव का नैसर्गिक वास था।''

इस इतिहासकार का कथन है किसी महान व्यक्ति की परख तीन बातों से की जा सकती है। क्या उसके समकालीन लोगों ने उसे साहसी, तेजस्वी और सच्चे आचरण का पाया? क्या उसने अपने युग के स्तरों से ऊंचा उठने में उल्लेखनीय महानता का परिचय दिया? क्या उसने सामान्यतः पूरे संसार के लिए अपने पीछे कोई स्थाई धरोहर छोड़ी? इस तालिका को और लम्बा किया जा सकता है, लेकिन जहां तक पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) का संबंध है वे जांच की इन तीनों कसौटियों पर पूर्णतः खरे उतरते हैं। अन्तिम दो बातों के संबंध में कुछ प्रमाणों का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है।

इन तीन कसौटियों में पहली है, क्या पैग़म्बरे इस्लाम को आप के समकालीन लोगों ने तेजस्वी, साहसी और सच्चे आचरण वाला पाया था?

ऐतिहासिक दस्तावेज़ साक्षी हैं कि क्या दोस्त, क्या दुश्मन, हज़रत मुहम्मद (ﷺ) के सभी समकालीन लोगों ने

जीवन के सभी मामलों व सभी क्षेत्रों में पैग़म्बरे इस्लाम के उतकृष्ट गुणों, आप की निष्कलंक ईमानदारी, आप के महान नैतिक सदगुणों तथा आप की अबाध निश्छलता और हर संदेह से मुक्त आप की विश्वसनियता को स्वीकार किया है। यहां तक कि यहूदी और वे लोग जिनको आपके संदेश पर विश्वास नहीं था, वे भी आपको अपने झगड़ों में पंच या मध्यस्थ बनाते थे, क्योंकि उन्हें आपकी ग़ैरजानिबदारी पर पूरा यक़ीन था। वे लोग भी जो आप के संदेश पर ईमान नहीं सखते थे, यह कहने पर विवश थे – ''ऐ मुहम्मद हम तुमको झूठा नहीं कहते, बल्कि उसका इंकार करते हैं जिसने तुम को किताब दी तथा जिसने तुम्हें रसूल बनाया। वक समझते थे कि आप पर किसी (जिन्न आदि) का असर है, जिससे छुटकारा दिलाने के लिए वे आप के विरूद्ध हिंसा तक पर उतर आये।

लेकिन उन में जो बेहतरीन लोग थे, उन्होंने देखा कि आपके ऊपर एक नयी ज्योति अवतरित हुई है और वे उस ज्ञान को पाने के लिए दौड़ पड़े। पैग़म्बरे इस्लाम के जीवन इतिहास की यह विशिष्टता उल्लेखनीय है कि आप के निकटतम रिश्तेदार, आपके प्रिय चचेरे भाई, आप के घनिष्ट मित्र, जो आप को बहुत निकट से जानते थे, इन्होंने आप के पैग़ाम की सच्चाई को दिल से माना और इसी प्रकार आप की पैग़म्बरी की सत्यता को भी स्वीकार

किया। पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) पर ईमान ले आने वाले ये कुलीन शिक्षित एवं बुद्धिमान स्त्रिया और पुरूष आप के व्यकितगत जीवन से भली–भांति परिचित थे। वे आप के व्यक्तित्व में अगर धोखेबाज़ी और फ्राड की ज़रा सी झलक भी देख पाते या आप में धन लोलुपता देखते या आप में आत्म–विश्वास की कमी पाते तो आप की चरित्र निर्माण, आत्मिक जागृति तथा समाजोद्धार की सारी आशाएं ध्वस्त होकर रह जातीं। एक नये भवन के निर्माण के लिए आप का खड़ा किया हुआ सारा ढांचा एक क्षण में धराशायी हो जाता। इस के विपरीत हम देखते हैं कि आप के अनुयायियों की निष्ठा और आपके प्रति उनके समर्थन का यह हाल था कि उन्होंने स्वेच्छा से अपना जीवन आप को समर्पित करके आपका नेतृत्व स्वीकार कर लिया। उन्होंने आप के लिए यातनाओं और खतरों को वीरता के साथ झेला, आप पर ईमान लाये, आप का विश्वास किया, आप की आज्ञाओं का पालन किया और आपका हार्दिक सम्मान किया। और यह सब कुछ उन्होंने दिल दहला देने वाली यातनाओं के बावजूद किया। तथा सामाजिक बहिष्कार से उत्पन्न घोर मानसिक यंत्रणा को शान्तिपूर्वक सहन किया। यहां तक कि इसके लिए उन्होंने मौत तक की परवाह नहीं की। क्या यह सब कुछ उस हालत में भी संभव होता यदि वे अपने नेता में तनिक भी भ्रष्टता या अनैतिकता पाते?

आरम्भिक काल में इस्लाम स्वीकार करने वालों के ऐतिहासिक क़िस्से पढ़िये तो इन बेकुसूर मर्दों और औरतों पर ढाये गये ग़ैर इन्सानी अत्याचारों को देखते हुए कौन सा दिल है जो रो न पड़ेगा? एक मासूम औरत सुमैया (रज़ियल्लाहु अन्हा) को बेरहमी के साथ बरछे मार–मार कर हलाक कर डाला गया। एक मिसाल यासिर की भी है, जिनकी टांगों को दो ऊंटों से बांध दिया गया, और फिर उन ऊंटों को विपरीत दिशा में हांका गया। ख़ब्बाब बिन अरत्त को धधकते हुए कोयलों पर लिटा कर निर्दयी ज़ालिम उन के सीने पर खड़ा हो गया, ताकि वे हिलडुल न सकें, यहां तक कि उन की खाल जल गयी और चर्बी पिघल कर निकल पड़ी। और खुबैब बिन अदी के गोश्त को निर्ममता से नोच–नोच कर तथा उनके अंग काट–काट कर उन की हत्या की गयी। इन यातनाओं के बीच उन से पूछा गया, क्या अब वे यह न चाहेंगे कि उनकी जगह पर पैग़म्बर मुहम्मद होते? (जो कि उस वक़्त अपने घर वालों के साथ अपने घर में थे) तो पीड़ित खुबैब ने ऊंचे स्वर में कहा कि पैग़म्बर मुहम्मद को एक कांटा चुभने की मामूली तकलीफ से बचाने के लिए भी वे अपनी जान, अपने बच्चों एवं परिवार, अपना सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार हैं। इस तरह के दिल दहलाने वाले बहुत से वाक़िये पेश किए जा सकते हैं, लेकिन यह सब घटनाएं आखिर क्या सिद्ध करती हैं?

ऐसा कैसे हो सका कि इस्लाम के इन बेटे और बेटियों ने अपने पैग़म्बर के प्रति केवल निष्ठा ही नहीं दिखाई, बल्कि उन्होंने अपने शरीर, हृदय और आत्मा का नज़राना उन्हें पेश किया? पैग़म्बर मुहम्मद के प्रति उनके निकटतम अनुयायियों की यह दृढ़ आस्था और विश्वास, क्या उस कार्य के प्रति, जो पैग़म्बर मुहम्मद के सुपुर्द किया गया था, उन की ईमानदारी, निष्पक्षता तथा तन्मयता का अत्यन्त उत्तम प्रमाण नहीं है?

ध्यान रहे कि ये लोग न तो निचले दर्जे के थे और न कम अक़्ल वाले। आप के मिशन के आरम्भिक काल में जो लोग आप के चारों ओर जमा हुए वे मक्का के श्रेष्ठतम लोग थे, उसके फूल और मक्खन, ऊंचे दर्जे के, धनी और सभ्य थे। इन में आप के खानदान और परिवार के क़रीबी लोग भी थे, जो आप की अन्दरूनी और बाहरी ज़िन्दगी से भली–भांति परिचित थे। आरम्भ के चारों खलीफा भी, जो कि महान व्यक्तित्व के मालिक हुए, इस्लाम के आरम्भिक काल ही में इस्लाम में दाखिल हुए।

'इन्साइक्लो पीडिया बिरटानिका' में उल्लिखित हैः

''समस्त पैग़म्बरों और धार्मिक क्षेत्र के महान व्यक्तित्वों में मुहम्मद (ﷺ) सब से ज़्यादा सफल हुए हैं।''

लेकिन यह सफलता कोई आकस्मिक चीज़ न थी। न ऐसा ही है कि यह आसमान से अचानक आ गिरी हो,

बल्कि यह उस वास्तविकता का फल थी कि आप के समकालीन लोगों ने आप के व्यक्तित्व को साहसी और निष्कपट पाया। यह आप के प्रशंसनीय और अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व का फल था।

पैग़म्बर मुहम्मद के व्यक्तित्व की सभी यथार्थताओं का जान लेना बड़ा कठिन काम है। मैं तो उसकी बस कुछ झलकियां ही देखे सका हूँ। आप के व्यक्तित्व के कैसे–कैसे मन–भावन दृश्य निरन्तर नाटकीय प्रभाव के साथ सामने आते हैं। पैगम्बर मुहम्मद कई हैसियत से हमारे सामने आते हैं – मुहम्मद पैग़म्बर, मुहम्मद जनरल, मुहम्मद शासक, मुहम्मद योद्धा, मुहम्मद व्यापारी, मुहम्मद उपदेशक, मुहम्मद दार्शनिक, मुहम्मद राजनीतिज्ञ, मुहम्मद वक्ता, मुहम्मद समाज सुधारक, मुहम्मद यतीमों के पोषक, मुहम्मद गुलामों के रक्षक, मुहम्मद स्त्री वर्ग का उद्धार करने और उन को बन्धनों से मुक्त कराने वाले, मुहम्मद न्याय करने वाले, मुहम्मद सन्त। और इन सभी महत्वपूर्ण भूमिकाओं और मानव–कार्य क्षेत्रों में आप की हैसियत समान रूप से एक महान नायक की है।

अनाथ अवस्था अत्यन्त बेचारगी और असहाय स्थिति का दूसरा नाम है और इस संसार में आप के जीवन का आरम्भ इसी स्थिति से हुआ। राज सत्ता इस संसार में भौतिक शक्ति की चरम सीमा होती है और आप शक्ति की यह चरम सीमा प्राप्त करके दुनिया से रूख्सत हुए। आपके जीवन का आरम्भ एक यतीम बच्चे

के रूप में होता है, फिर हम आप को एक सताये हुए मुहाजिर के रूप में पाते हैं और आखिर में हम यह देखते हैं कि आप एक पूरी क़ौम के दुनियावी और रूहानी पेशवा और उस की क़िस्मत के मालिक हो गये हैं। आप को इस मार्ग में जिन आज़माइशों, प्रलोभनों, कठिनाइयों और परिवर्तनों, अन्धेरों और उजालों, भय और सम्मान, हालात के उतार–चढ़ाव आदि से गुज़रना पड़ा, उन सब में आप सफल रहे। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आप ने एक आदर्श पुरूष की भूमिका निभाई। उस के लिए आप ने दुनिया से लोहा लिया और पूर्ण रूप से विजयी हुए। आप के कारनामों का संबंध जीवन के किसी एक पहलू से नहीं है, बल्कि वे जीवन के सभी क्षेत्रों को व्याप्त है।

उदाहरण स्वरूप अगर महानता इस पर निर्भर करती है कि किसी ऐसी जाति का सुधार किया जाये जो सर्वथा बर्बरता और असभ्यता में ग्रस्त हो और नैतिक दृष्टि से वह अत्यन्त अन्धकार में डूबी हुई हो, तो वह शकितशाली व्यक्ति आप हैं, जिसने अरबों जैसी अत्यन्त पस्ती में गिरी हुई क़ौम को ऊंचा उठाया, उसे सभ्यता से सुसज्जित कर के कुछ से कुछ कर दिया, उसने उसे दुनिया मे ज्ञान और सभ्यता का प्रकाश फैलाने वाली बना दिया। इस तरह आप का महान होना पूर्ण रूप से सिद्ध होता है। यदि महानता इस में है कि किसी समाज के

परस्पर विरोधी और बिखरे हुए तत्वों को भाईचारे और दयाभाव के सूत्रों द्वारा बांध दिया जाए तो मरूस्थल में जन्में पैग़म्बर निःसन्देह इस विशिष्टता और प्रतिष्ठा के पात्र हैं। यदि महानता उन लोगों के सुधार करने में है जो अन्ध विश्वासों तथा इस प्रकार की हानिकारक प्रथाओं और आदतों में ग्रस्त हों तो पैग़म्बरे इस्लाम ने लाखों लोगों को अन्ध विश्वासों और बेबुनियाद भय से मुक्त किया। अगर महानता उच्च आचरण पर आधारित होती है, तो शत्रुओं और मित्रों दोनों ने मुहम्मद साहब को ''अल–अमीन'' और ''अस–सादिक़'' विश्वसनीय और सत्यावादी स्वीकार किया है। अगर एक विजेता महानता का पात्र है तो आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अनाथ और असहाय और साधारण व्यक्ति की स्थिति से उभरे और खुसरो और क़ैसर की तरह अरब उपमहाद्वीप के स्वतंत्र शासक बने। आप ने एक ऐसा महान राज्य स्थापित किया जो चौदह सदियों की लम्बी मुद्दत गुज़रने के बावजूद आज भी मौजूद है। और अगर महानता का पैमाना वह समर्पण है जो किसी नायक को उसके अनुयायियों से प्राप्त होता है, तो आज भी सारे संसार में फैली करोड़ों आत्माओं को मुहम्मद का नाम जादू की तरह सम्मोहित करता है।

आपने एथेन्स, रोम, ईरान, भारत या चीन के ज्ञान केन्द्रों से दर्शन का ज्ञान प्राप्त नहीं किया था, लेकिन

आपने मानवता को चिरस्थायी महत्व की उच्चतम सच्चाइयों से परिचित कराया। वे निरक्षर थे, लेकिन उनको ऐसे भावपूर्ण और उत्साह पूर्ण भाषण करने की योग्यता प्राप्त थी कि लोग भाव–विभोर हो उठते और उनकी आंखों से आँसू फूट पड़ते। वे अनाथ थे और धनहीन भी, लेकिन जन–जन के हृदय में उनके प्रति प्रेमभाव था। उन्होंने किसी सैन्य अकादमी में शिक्षा ग्रहण नहीं की थी, लेकिन फिर भी उन्होंने भयंकर कठिनाइयों और रूकावटों के बवाजूद सैन्य शक्ति जुटाई और अपनी आत्मशक्ति के बल पर, जिसमें आप अग्रणी थे, कितनी ही विजय प्राप्त कीं। कुशलता–पूर्ण धर्म प्रचार करने वाले ईश्वर प्रदत्त योग्यताओं के लोग कम ही मिलते हैं। डेर्काड के अनुसार :

''आदर्श उपदेशक संसार के दुर्लभतम प्राणिओं में से है।''

हिटलर ने भी अपनी पुस्तक 'Mein Kamp' (मेरी जीवन गाथा) में इसी तरह का विचार व्यक्त किया है। वह लिखता है :

''महान सिद्धांत शास्त्री कभी कभार ही महान नेता होता है। इसके विपरीत एक आन्दोलनकारी व्यक्ति में नेतृत्व की योग्यताएं अधिक होती हैं। वह एक बेहतर नेता तो अवश्य होगा, क्योंकि नेतृत्व का अर्थ होता है,

अवाम को प्रभावित एवं संचालित करने की क्षमता। जन–नेतृत्व की क्षमता का नये विचार देने की योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं है।''

लेकिन वह आगे कहता है :

''इस धरती पर एक ही व्यक्ति सिद्धांत शास्त्री भी हो, संयोजक भी हो ओर नेता भी, यह दुर्लभ है। किन्तु महानता इसी में निहित है।''

पैग़म्बरे इस्लाम मुहम्मद (ﷺ) के व्यक्तित्व में संसार ने इस दुर्लभतम उपलब्धि को सजीव एवं साकार देखा है।

इस से भी अधिक विस्मयकारी है वह टिप्पड़ी जो बास वर्थ स्मिथ ने की है :

''वे जैसे सांसारिक राज्यसत्ता के प्रमुख थे, वैसे ही दीनी पेशवा भी थे। मानो पोप और क़ैसर दोनों का व्यक्तित्व उन अकेले में एकीभूत हो गया था। वे सीज़र (बादशाह) भी थे और पोप (धर्मगुरू) भी। वे पोप थे किन्तु पोप के आडम्बर से मुकत। और वे ऐसे क़ैसर थे जिनके पास राजसी ठाट–बाट, आगे–पीछे अंगरक्षक और राजमहल न थे, न राजस्व प्राप्ति की विशिष्ट व्यवस्था। यदि कोई व्यक्ति यह कहने का अधिकारी है कि उसने दैवी अधिकार से राज किया, तो वे मुहम्मद ही हो सकते हैं, क्योंकि उन्हें बाहय साधनों और सहायक चीज़ों के

बिना ही राज करने की शकित प्राप्त थी। आप को इस की परवाह नहीं थी कि जो शक्ति आप को प्राप्त थी उसके प्रदर्शन के लिए कोई आयोजन करें। आप के निजी जीवन में जो सादगी थी, वही सादगी आपके सार्वजनिक जीवन में भी पाई जाती थी।''

मक्का पर विजय के बाद 10 लाख वर्गमील से अधिक ज़मीन आप के क़दमों तले थी। आप पूरे अरब के मालिक थे, लेकिन फिर भी वह मोटे–झोटे ऊनी वस्त्रों और जूतों की मरम्मत स्वयं करते, बकरियां दूहते, घर में झाड़ू लगाते, आग जलाते और घर–परिवार का छोटे से छोटा काम भी खुद कर लेते। अपने जीवन के आख़िरी दिनों में पूरा मदीना धनवान हो चुका था। हर जगह सोने चांदी की बहतायत थी, लेकिन इस के बावजूद 'अरब के इस सम्राट' के घर के चूल्हे में कई–कई हफ्ते तक आग न जलती थी और खजूरों और पानी पर आप का गुज़ारा होता था। आप के घर वालों की लगातार कई–कई रातें भूखे पेट गुज़र जातीं, क्योंकि उनके पास शाम को खाने के लिए कुछ भी न होता। तमाम दिन व्यस्त रहने के बाद रात को आप नर्म बिस्तर पर नहीं, बल्कि खजूर की चटाई पर सोते। अक्सर ऐसा होता कि आप की आँखों में आँसू बह रहे होते और आप अपने सृष्टा से इस की दुआ कर रहे होते कि वह आप को ऐसी शक्ति दे कि आप अपने कर्तव्यों को पूरा कर सकें। रिवायतों से मालूम

होता है कि रोते–रोते आपकी आवाज़ रूँध जाती थी और ऐसा लगता जैसे कोई बर्तन आग पर रखा हुआ हो और उसमें पानी उबलने लगा हो। आप के देहान्त के दिन आप की कुल पूंजि कुछ थोड़े सिक्के थे, जिनका एक भाग क़र्ज़ की अदायगी में काम आया और बाक़ी ज़रूरतमंद को दे दिया गया, जो आप के घर दान मांगने आ गया था। जिन वस्त्रों में आपने अंतिम सांस लिए उनमें अनेक पैवन्द लगे हुए थे। वह घर जिससे पूरी दुनिया में रोशनी फैली, वह ज़ाहिरी तौर पर अन्धेरों में डूबा हुआ था, क्योंकि चिराग जलाने के लिए घर में तेल न था।

परिस्थितियां बदल गईं, लेकिन खुदा का पैग़म्बर नहीं बदला। विजय हुई हो या हार, सत्ता प्राप्त हुई हो या उसके विप्रीत की स्थिति हो, खुशहाली रही हो या ग़रीबी, प्रत्येक दशा में आप एक से रहे, कभी आप के उच्च चरित्र में अन्तर न आया। खुदा के मार्ग और उसके क़ानूनों की तरह खुदा के पैग़म्बरों में कभी कोई तब्दीली नहीं आया करती।

एक कहावत है – ईमानदार व्यक्ति खुदा का है। मुहम्मद (ﷺ) ईमानदार से भी बढ़कर थे। उनके अंग–अंग में मानवता रची बसी थी। मानव सहानुभूति और प्रेम उनकी आत्मा का संगीत था। मानव सेवा, उसका उत्थान, उसकी आत्मा को विकसित करना, उसे शिक्षित करना सारांश यह कि मानव को मानव बनाना उनका मिशन था। उनका जीना, उनका मरना सब कुछ इसी एक लक्ष्य के लिए अर्पित था। उनके आचार–विचार, वचन और कर्म का एक मात्र दिशा निर्देशक सिद्धांत एवं प्रेरणा स्रोत मानवता की भलाई था।

आप अत्यन्त विनीत, हर आडम्बर से मुक्त तथा एक आदर्श निःस्वार्थी थे। उन्होंने अपने लिए कौन–कौन सी उपाधियां चुनीं? केवल दोः **अल्लाह का बन्दा और उसका पैग़म्बर।** आप वैसे ही पैगम्बर और संदेशवाहक थे, जैसे संसार के हर भाग में दूसरे पैग़म्बर गुज़र चुके हैं। जिनमें से कुछ को हम जानते हैं और बहुत सों को नहीं। अगर इन सच्चाइयों में से किसी एक से भी ईमान उठ जाये तो आदमी मुसलमान नहीं रहता। यह तमाम मुसलमानों का बुनियादी अक़ीदा है।

एक यूरोपीय विचारक का कथन है :

''उस समय की परिस्थितियों तथा उनके अनुयायियों की उनके प्रति असीम श्रृद्धा को देखते हुए पैग़म्बर की सब में बड़ी विचित्रता यह है कि उन्होंने कभी भी मोजज़े (चमत्कार) दिखा सकने का दावा नहीं किया।''

आप से कई चमत्कार ज़ाहिर हुए, लेकिन उन चमत्कारों का प्रयोजन धर्म प्रचार न था। उनका श्रेय आप ने स्वयं न लेकर पूर्णतः अल्लाह का ओर उसके उन अलौकिक तरीक़ों को दिया जो मानव के लिए रहस्मय हैं। आप स्पष्ट शब्दों में कहते थे कि वे भी दूसरे इन्सानों की तरह ही एक इन्सान हैं। आप ज़मीन व आसमानों के खज़ानों के मालिक नहीं। आप ने कभी यह दावा भी नहीं किया कि भविष्य के गर्भ में क्या कुछ रहस्य छुपे हुए हैं। यह सब कुछ उस काल में हुआ जबकि आश्चर्यजनक चमत्कार दिखाना साधू सन्तों के लिए मामूली बात समझी जाती थी और जबकि अरब हो या अन्य देश पूरा वातावरण ग़ैबी और अलौकिक सिद्धियों के चक्कर में ग्रस्त था।

आप ने अपने अनुयायियों का ध्यान प्रकृति और उनके नियमों के अध्ययन की ओर फेर दिया। ताकि वे उन को समझें और अल्लाह की महानता का गुणगान करें।

कुरआन कहता है–

'' और हमने आकाशों व धरती को और जो कुछ उन के बीच है, कुछ खेल के तौर पर नहीं बनाया। हमने इन्हें बस हक़ के साथ (सउद्देश्य) पैदा किया, परन्तु इनमें अधिकतर लोग (इस बात को) जानते नहीं। (दुख़ान : 38–39)

यह जगत न कोई भ्रम है और न उद्देश्य रहित। बकि इसे सत्य और हक़ के साथ पैदा किया गया है। कुरआन की उन आयतों की संख्या जिन में प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण की दावत दी गई है, उन सब आयतों से कई गुना अधिक है जो नमाज़, रोज़ा, हज्ज आदि आदेशों से संबंधित हैं। इन आयतों का असर लेकर मुसलमानों ने प्रकृति का निकट से निरीक्षण करना आरम्भ किया। जिसने निरीक्षण और परीक्षण एवं प्रयोग के लिए ऐसी वैज्ञानिक मनोवृति को जन्म दिया, जिससे यूनानी भी अनभिज्ञ थे। मुस्लिम वनस्पति शास्त्री इब्ने बैतार ने संसार के सभी भू–भागों से पौधे एकत्र करके वनस्पति शास्त्र पर वह पुस्तक लिखी, जिसे मेयर (**Mayer**) ने अपनी पुस्तक '**Geshder Botanica**' में 'कड़े श्रम की पुरातननिधि' की संज्ञा दी है। अलबेरूनी ने चालीस वर्ष तक यात्रा करके खनिज पदार्थों के नमूने एकत्र किये, तथा मुस्लिम खगोलशास्त्रियों 12 वर्षों से भी अधिक अवधि तक निरीक्षण और परीक्षण में लगे रहे, जबकि

अरस्तु ने एक भी वैज्ञानिक परीक्षण किये बिना भौतिक शास्त्र पर क़लम उठाया। और भौतिक शास्त्र का इतिहास लिखते समय उसकी लापरवाही का यह हाल है कि उसने लिख दिया कि 'इन्सान के दांत जानवर से ज़्यादा होते हैं, लेकिन इसे सिद्ध करने के लिए कोई तकलीफ नहीं उठाई, हालांकि यह कोई मुश्किल काम न था।

शरीर रचना शास्त्र के महान ज्ञाता शलेन ने बताया है कि इंसान के निचले जबड़े में दो हड्डियां होती हैं, इस कथन को सदियों तक बिना चुनौती असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया जाता रहा, यहां तक कि एक मुस्लिम विद्वान अब्दुल लतीफ ने एक मानवीय कंकाल का स्वयं निरीक्षण करके सही बात से दुनिया को अवगत कराया। इस प्रकार की अनेकों घटनाओं को उदघ्रत करते हुए राबर्ट ब्रीफ्फालट अपनी प्रसिद्ध पुस्तक '**The Making Of Humanity**' 'मानवता का सर्जन' में अपने उद्‌गार इन शब्दों में व्यक्त करता हैः—

''हमारे विज्ञान पर अरबों का आभार केवल उनकी आश्चर्यजनक खोजों या क्रान्तिकारी सिद्धान्तों एवं परिकल्पनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि विज्ञान पर अरब सभ्यता का इससे कहीं अधिक उपकार है, और वह है स्वयं विज्ञान का अस्तित्व।''

यही लेखक लिखता हैः–

''यूनानियों ने वैज्ञानिक कल्पनाओं को व्यवस्थित किया, उन्हें सामान्य नियम का रूप दिया और उन्हें सिद्धांत बद्ध किया, लेकिन जहां तक खोज–बीन करने के धैर्य पूर्ण तरीक़ों का पता लगाने, निश्चयात्मक एवं स्वीकारात्मक तथ्यों को एकत्र करने, वैज्ञानिक अध्ययन के सूक्ष्म तरीक़े निर्धारित करने, व्यापक एवं दीर्घकालिक अवलोकन व निरीक्षण करने तथा परीक्षणात्मक अन्वेषण करने का प्रश्न है, ये सारी विशिष्टिताएं यूनानी मिज़ाज के लिए बिल्कुल अजनबी थीं। जिसे आज विज्ञान कहते हैं, जो खोज–बीन की नयी विधियों, परीक्षण के तरीक़ों, अवलोकन व निरीक्षण की पद्धति, नाप तोल के तरीक़ों तथा गणित के विकास के परिणाम स्वरूप यूरोप में उभरा, उसके इस रूप से यूनानी बिल्कुल बेख़बर थे। यूरोपीय जगत को इन विधियों और इस वैज्ञानिक प्रवृत्ति से अरबों ही ने परिचय कराया।

पैग़म्बर मुहम्मद की शिक्षाओं की ही यह व्यवहारिक गुण है, जिसने वैज्ञानिक प्रवृत्ति को जन्म दिया। इन्हीं शिक्षाओं ने नित्य के काम–काज और उन कामों को भी जो सांसारिक काम कहलाते हैं आदर और पवित्रता प्रदान की। कुर्आन कहता है कि इन्सान को खुदा की इबादत के लिए पैदा किया गया है, लेकिन 'इबादत' (पूजा) की उस की अपनी अलग परिभाषा है। खुदा की इबादत केवल पूजा–पाठ आदि तक सीमित नहीं, बल्कि हर वह कार्य जो अल्लाह के आदेशानुसार उसकी प्रसन्नता प्राप्त करने तथा मानव–जाति की भलाई के लिए किया जाये इबादत के अन्तर्गत आता है। इस्लाम ने पूरे जीवन और उससे संबद्ध सारे मामलों को पावन एवं पवित्र घोषित किया है। शर्त यह है कि उसे ईमानदारी, न्याय और नेकनियती के साथ किया जाए। पवित्र और अपवित्र के बीच चले आ रहे अनुचित भेद को मिटा दिया। कुरआन कहता है कि अगर तुम पवित्र और स्वच्छ भोजन खाकर अल्लाह का आभार स्वीकार करो तो यह भी इबादत है। पैग़म्बरे इस्लाम ने कहा है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को खाने का लुक़्मा खिलाता है तो यह भी नेकी और भलाई का काम है और अल्लाह के यहां वह इसका अच्छा बदला पायेगा। पैग़म्बर की एक और हदीस हैः–

''अगर कोई व्यक्ति अपनी कामना और ख्वाहिश को पूरा करता है तो उसका भी उसे सवाब मिलेगा। शर्त यह है कि वह इसके लिए वही तरीक़ा अपनाये जो जाईज़ हो।''

एक साहब जो आपकी बात सुन रहे थे, आश्चर्य से बोलेः

हे अल्लाह के पैग़म्बर! वह तो केवल अपनी इच्छाओं और अपने मन की कामनाओं को पूरा करता है।

आप ने उत्तर दियाः

''यदि उसने अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए अवैध तरीक़ों और साधनों को अपनाया होता तो उसे इसकी सज़ा मिलती, तो फिर जाईज़ तरीक़ा अपनाने पर उसे इन्आम क्यों नहीं मिलना चाहिए?''

धर्म की इस नयी धारणा ने कि 'धर्म का विषय पूर्णतः अलौकिक जगत के मामलों तक सीमित न रहना चाहिए, बल्कि इसे लौकिक जीवन के उत्थान पर भी ध्यान देना चाहिए। नीति–शास्त्र और आचार–शास्त्र के नये मूल्यों एवं मान्यताओं को नयी दिशा दी। इसने दैनिक जीवन में लोगों के सामान्य आपसी संबंधों पर स्थाई प्रभाव डाला। इसने जनता के लिए गहरी शक्ति का काम किया, इसके अतिरिक्त लोगों के अधिकारों और कर्तव्यों की धारणाओं को सुव्यवस्थित करना और इसका

अनपढ़ लोगों और बुद्धिमान दार्शनिकों के लिए समान रूप से ग्रहण करने और व्यवहार में लाने के योग्य होना पैग़म्बरे इस्लाम की शिक्षाओं की प्रमुख विशेषताएं हैं। यहां यह बात सतर्कता के साथ दिमाग़ में आ जानी चाहिए कि भले कामों पर ज़ोर देने का अर्थ यह नहीं है कि इसके लिए धार्मिक आस्थाओं की पवित्रता एवं शुद्धता को क़ुर्बान किया गया है। ऐसी बहुत सी विचार धाराएं हैं, जिनमें या तो व्यवहारिता के महत्व की बलि देकर आस्थाओं ही को सर्वोपरि माना गया है या फिर धर्म की शुद्ध धारणा एवं आस्था की परवाह न कर के केवल कर्म को ही महत्व दिया गया है। इन के विपरीत इस्लाम सत्य आस्था एवं सतकर्म के नियम पर आधारित है। यहां साधन भी उतना ही महत्व रखते हैं जितना लक्ष्य। लक्ष्यों को भी वही महत्ता प्राप्त है जो साधनों को प्राप्त हैं। यह एक जैव इकाई की तरह है, इसके जीवन और विकास का रहस्य इन के आपस में जुड़े रहने में निहित है। अगर ये एक दूसरे से अलग होते हैं तो ये क्षीण और विनष्ट होकर रहेंगे। इस्लाम में ईमान और अमल को अलग–अलग नहीं किया जा सकता। सत्य ज्ञान को सत्कर्म में ढल जाना चाहिए, ताकि अच्छे फल प्राप्त हो सकें।

''जो लोग ईमान रखते हैं और नेक अमल करते हैं, केवल वे ही स्वर्ग में जा सकेंगे।''

यह बात कुरआन में कितनी ही बार दोहराई गई है? इस बात को पचास बार से कम नहीं दोहराया गया है। सोच–विचार और ध्यान पर उभारा अवश्य गया है, लेकिन मात्र ध्यान और सोच–विचार ही लक्ष्य नहीं है। जो लोग केवल ईमान रखें, लेकिन उसके अनुसार कर्म न करें उनका इस्लाम में कोई मुक़ाम नहीं है। जो ईमान तो रखें लेकिन कुकर्म भी करें उनका ईमान क्षीण है। ईश्वरीय क़ानून मात्र विचार पद्वित नहीं, बल्कि वह एक कर्म और प्रयास का क़ानून है। यह दीन लोगों के लिए ज्ञान से कर्म और कर्म से परितोष द्वारा स्थायी एवं शाश्वत उन्नति का मार्ग दिखलाता है।

लेकिन वह सच्चा ईमान क्या है, जिससे सत्कर्म का आविर्भाव होता है, जिस के फलस्वरूप पूर्ण परितोष प्राप्त होता है? इस्लाम का बुनियादी सिद्धांत ऐकेश्वरवाद है 'अल्लाह बस एक ही है, उस के अतिरिक्त कोई इलाह नहीं' इस्लाम का मूल मंत्र है। इस्लाम की तमाम शिक्षाएं और कर्म इसी से जुड़े हुए हैं। वह केवल अपने अलौकिक व्यक्तित्व के कारण ही अद्वितीय नहीं, बल्कि अपने दिव्य एवं अलौकिक गुणों एवं क्षमताओं की दृष्टि से भी अनन्य और बेजोड़ है।

जहां तक ईश्वर के गुणों का संबंध है, दूसरी चीज़ों की तरह यहां भी इस्लाम के सिद्धांत अत्यन्त सुनहरे हैं। यह धारणा एक तरफ ईश्वर के गुणों से रहित होने की

कल्पना को अस्वीकार करती है तो दूसरी तरफ इस्लाम उन चीज़ों को ग़लत ठहराता है, जिनसे ईश्वर के उन गुणों का आभास होता है, जो सर्वथा भौतिक गुण होते हैं। एक ओर कुरआन यह कहता है कि उस जैसा कोई नहीं, तो दूसरी ओर वह इस बात की भी पुष्टि करता है कि वह देखता, सुनता और जानता है, वह ऐसा सम्राट है, जिससे तनिक भी भूल–चूक नहीं हो सकती। उस की शक्ति का प्रभावशाली जहाज़ न्याय एवं समानता के सागर पर तैरता है। वह अत्यन्त कृपाशील एवं दयावान है, वह सबका रक्षक है। इस्लाम इस स्वीकारात्मक रूप के प्रस्तुत करने ही पर बस नहीं करता, बल्कि वह समस्या के नकारात्मक पहलू को भी सामने लाता है, जो उसकी अत्यन्त महत्वपूर्ण विशिष्टता है। उसके अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं जो सबका रक्षक हो। वह हर टूटे को जोड़ने वाला है, उसके अलावा कोई नहीं जो टूटे हुए को जोड़ सके। वही हर प्रकार की क्षतिपूर्ति करने वाला है। उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं। वह हर प्रकार की अपेक्षाओं से परे है। उसी ने शरीर की रचना की, वही आत्माओं का सृष्टा है। वही न्याय (क़ियामत) के दिन का मालिक है। सारांश यह कि कुरआन के अनुसार सारे श्रेष्ठ एवं महान गुण उस में पाये जाते हैं।

जगत के संबंध से ब्रहमांड के सापेक्ष मनुष्य की जो हैसियत है, उस के विषय में कुरआन कहता हैः–

''इस धरती में और आकाशों में जो कुछ है खुदा ने तुम्हारे काम में लगा रखा है। तुम्हें सृष्टि पर हुकूमत करने के लिए नियत किया गया।''

लेकिन खुदा के संबंध में कुरआन कहता हैः—

''हे लोगो खुदा ने तुमको उत्कृष्ट क्षमताएं प्रदान की हैं। उसने जीवन बनाया और मृत्यु बनाई, ताकि तुम्हारी परीक्षा की जा सके कि कौन सुकर्म करता है और कौन सही रास्ते से भटकता है।''

इसके बावजूद कि इन्सान एक सीमा तक अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है, वह विशेष वातावरण और परिस्थितियों तथा क्षमताओं के बीच घिरा हुआ भी है। इन्सान अपना जीवन उन निश्चित सीमाओं के अन्दर व्यतीत करने के लिए बाध्य है, जिन पर उसका अपना कोई अधिकार नहीं है। इस संबंध में इस्लाम के अनुसार खुदा कहता है, मैं अपनी इच्छा के अनुसार इन्सान को उन परिस्थितियों में पैदा करता हूँ, जिनको मैं उचित समझता हूँ। असीम ब्रहमांड की स्कीमों को नश्वर मानव पूरी तरह नहीं समझ सकता। लेकिन मैं निश्चय ही सुख में और दुख में, तन्दुरूस्ती और बीमारी में, उन्नति और अवनति में तुम्हारी परीक्षा करूंगा। मेरी परीक्षा के तरीक़े हर मनुष्य और हर समय और युग के लिए विभिन्न हो सकते हैं। अतः मुसीबत में निराश न हो

और नाजाईज़ तरीक़ों व साधनों का सहारा न लो। यह तो गुज़र जाने वाली स्थिति है। खुशहाली में खुदा को भूल न जाओ। खुदा के उपहार तो तुम्हें मात्र अमानत के रूप में मिले हैं। तुम हर समयं व हर क्षण परीक्षा में हो। जीवन के इस चक्र व प्रणाली के संबंध में 'तुम्हारा काम यह नहीं कि किसी दुविधा में पड़ो, बल्कि तुम्हारा कर्तव्य तो यह है कि मरते दम तक कर्म करते रहो।' यदि तुमको जीवन मिला है तो खुदा की इच्छा के अनुसार जियो और मरते हो तो तुम्हारा यह मरना खुदा की राह में हो। तुम इसको नियति कह सकते हो, लेकिन इस प्रकार की नियति तो ऐसे शक्ति एवं प्राणदायक सतत प्रयास का नाम है, जो तुम्हें सदैव सतर्क रखता है। इस संसार में प्राप्त अस्थायी जीवन को मानव अस्तित्व का अन्त न समझ लो। मौत के बाद एक और जीवन भी हे, जो सदैव बाक़ी रहने वाला है। इस जीवन के बाद आने वाला जीवन वह द्वार है जिसके खुलने पर जीवन के अदृश्य तथ्य प्रकट होजायेंगे। इस जीवन का हर कार्य, चाहे वह कितना ही मामूली क्यों न हो, इसका प्रभाव सदा बाक़ी रहने वाला होता है। वह ठीक तौर पर अभिलिखित या अंकित हो जाता है। खुदा की कुछ कार्य पद्धति को तो तुम समझते हो, लेकिन बहुत सी बातें तुम्हारी समझ से दूर और नज़र से ओझल हैं। खुद तुम में जो चीज़ें छुपी हुई हैं वे दूसरी दुनिया में बिल्कुल

तुम्हारे सामने खोल दी जायेंगी। सदाचारी और नेक लोगों को खुदा का वह वरदान प्राप्त होगा जिस को न आँख ने देखा, न कान ने सुना, और न मन कभी उसकी कल्पना कर सका। उसके प्रसाद और उसके वरदान क्रमशः बढ़ते ही जायेंगे और उसको अधिकाधिक उन्नति प्राप्त होती रहेगी। लेकिन जिन्होंने इस जीवन में मिले अवसर को खो दिया वे उस अनिवार्य क़ानून की पकड़ में आ जायेंगे, जिसके अन्तर्गत मनुष्य को अपने करतूतों का मज़ा चखना पड़ेगा। उनको उन आत्मिक रोगों के कारण, जिनमें उन्होंने खुद अपने आप को ग्रस्त किया होगा, उनको इलाज के एक मरहले से गुज़रना होगा। सावधान हो जाओ! बड़ी कठोर व भयानक सज़ा है। शारीरिक पीड़ा तो ऐसी यातना है, उसको तुम किसी तरह झेल भी सकते हो, लेकिन आत्मिक पीड़ा तो जहन्नम (नरक) है, जो तुम्हारे लिए असहनीय होगी। अतः इसी जीवन में अपनी उन मनोवृत्तियों का मुक़ाबला करो, जिनका झुकाव गुनाह की ओर रहता है और वे तुम्हें पापाचार की ओर प्रेरित करती हैं। तुम उस अवस्था को प्राप्त करो, जबकि अन्तरात्मा जागृत हो जाये और महान नैतिक गुण प्राप्त करने के लिए विकल हो उठे और अवज्ञा के विरूद्ध विद्रोह करे। यह तुम्हें आत्मिक शान्ति की आखिरी मंज़िल तक पहुंचायेगा यानी अल्लाह की रज़ा हासिल करने की मंज़िल तक। और केवल

अल्लाह की रज़ा ही में आत्मा का अपना आनन्द भी निहित है। इस स्थिति में आत्मा के विचलित होने की संभावना न होगी, संघर्ष का मरहला गुज़र चुका होगा, सत्य ही विजयी होता है और झूठ अपना हथियार डाल देता है। उस समय सारी उलझनें दूर होजायेंगी। तुम्हारा मन दुविधा में नहीं रहेगा, तुम्हारा व्यक्तित्व अल्लाह और उसकी इच्छाओं के प्रति सम्पूर्ण–भाव के साथ पूर्णतः संगठित व एकीकृत हो जायेगा। तब सारी छुपी हुई शक्तियां और क्षमताएं पूर्णतः स्वतंत्र हो जायेंगी, और आत्मा को पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी, तब खुदा तुम से कहेगाः–

''ऐ सन्तुष्ट आत्मा तू अपने रब से पूरे तौर पर राज़ी हुई तू अब अपने रब की ओर लौट चल, तू उससे राज़ी है और वह तुझ से राज़ी है, अब तू मेरे (प्रिय) बन्दों में शामिल हो जा, और मेरी जन्नत में दाखिल हो जा।' (सूरः फज्र–)

यह है इस्लाम की दृष्टि में मनुष्य का परम लक्ष्य कि एक ओर तो वह इस जगत को वशीभूत करने की कोशिश में लगे और दूसरी तरफ उसकी आत्मा अल्लाह की रज़ा में चैन तलाश करे। केवल खुदा ही उससे राज़ी न हो बल्कि वह भी खुदा से राज़ी और सन्तुष्ट हो। इसके फलस्वरूप उसको मिलेगा चैन और पूर्ण चैन, परितोष, और पूर्ण परितोष, शान्ति और पूर्ण शान्ति। इस

अवस्था में खुदा का प्रेम उसका आहार बन जाता है और वह जीवन स्रोत से जी भर पीकर अपनी प्यास को बुझाता है। फिर न तो दुख और निराशा उसको पराजित एवं वशीभूत कर पाती है और न सफलताओं में वह इतराता और आपे से बाहर होता है।

थाम्स कारलायस इस जीवन दर्शन से प्रभावित हो कर लिखता है :

''और फिर इस्लाम की भी यही मांग है—हमें अपने को अल्लाह के प्रति समर्पित कर देना चाहिए, हमारी सारी शक्ति उसके प्रति पूर्ण समर्पण में निहित है। वह हमारे साथ जो कुछ करता है, हमें जो कुछ भी भेजता है, चाहे वह मौत ही कयों न हो या उससे भी बुरी कोई चीज़, वह वस्तुतः हमारे भले की और हमारे लिए उत्तम ही होगी। इस प्रकार हम खुद को खुदा की रज़ा के प्रति समर्पित कर देते हैं।''

लेखक आगे चलकर गोयटे का प्रश्न उदघृत करता है:

''गोयटे पूछता है यदि यही इस्लाम हे तो क्या हम सब इस्लामी जीवन व्यतीत नहीं कर रहे हैं?''

इसके उत्तर में कारलायल लिखता है :

''हां हम में से वे सब जो नैतिक व सदाचारी जीवन व्यतीत करते हैं वे सभी इस्लाम में ही जीवन व्यतीत कर रहे हैं। यह तो अन्ततः वह सर्वोच्च ज्ञान एवं प्रज्ञा है जो आकाश से इस धरती पर उतारी गयी है।''